जांच या बदले की कार्यवाही!

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री पी चिदंबरम और उनके बेटे कार्ति चिदंबरम के ठिकानों पर पड़े छापों से देश की राजनीति अचानक गरमा गई है। पूरा विपक्ष इसे एक स्वर से राजनीतिक बदले की कार्रवाई बता रहा है। चेन्नई में चिदंबरम और उनके बेटे के खिलाफ सीबीआई ने विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफआईपीबी) द्वारा आई एन एक्स मीडिया (अब 9 एक्स मीडिया) को दी गई मंजूरी के मामले में छापेमारी की, जबकि आयकर विभाग ने लालू यादव के बेनामी सौदों का पता लगाने के लिए दिल्ली और गुडगांव में 20 से ज्यादा जगहों पर छापे मारे। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को शक है कि लालू और उनसे जुड़े लोगों के पास एक हजार करोड़ की बेनामी प्रॉपर्टी है। पिछले कुछ वर्षों में सीबीआई और केंद्रीय एजेंसियों की ऐसी छवि बन गई है कि सरकार इनके जरिए विपक्षी दलों को काबू में रखती है। इस धारणा का आधार यह रहा कि कई नेताओं के खिलाफ करप्शन के मामले अचानक ही उठते रहे और फिर ठंडे बस्ते में चले गए। वे मुकाम तक नहीं पहुंच पाए। यही वजह है कि जनता सीबीआई की कार्रवाइयों पर संदेह करने लगी है। बहरहाल सीबीआई का दावा है कि उसने पुख्ता सबूत के आधार पर ही मौजूदा कदम उठाया है। ऐसे में उसे बेरोकटोक अपना काम करना चाहिए और पूरी तत्परता के साथ मामले को अंजाम तक पहुंचाना चाहिए। इससे उनका मुंह बंद हो जाएगा, जो उस पर सवाल उठा रहे हैं। लेकिन उसकी साख तब और मजबूत होगी, जब वह सभी मामलों में बराबर रूप से सक्रिय दिखेगी। ऐसा न हो कि वह विपक्ष से जुड़े केसों में तो चुस्त-दुरुस्त दिखे, लेकिन सत्तारूढ़ दल से जुड़े मामलों में उसकी चाल मंद पड़ जाए। इसलिए उससे अपेक्षा की जाती है कि वह मध्य प्रदेश के व्यापम घोटाले और ऐसे अन्य केसों में जो बीजेपी सरकारों से जुड़े हैं, शीघ्रता से काम करे और दोषियों को सामने लाए। छापों को लेकर अपोजिशन के आरोपों का सरकार ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया है। केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने स्पष्ट कहा कि जांच एजेंसियां ठोस सबूतों के बिना कार्रवाई नहीं करती। जो ऊंचे पदों पर बैठे हैं और जिन्होंने फर्जी कंपनियों की मदद से पैसा बनाया है, उनका मामला कोई छोटा मसला नहीं है। मोदी सरकार ने शुरू से ही भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़े कदम उठाए हैं। कालेधन पर रोक के लिए वह जो कुछ भी कर सकती थी, उसने किया। उसने विरोध की परवाह न करते हुए नोटबंदी जैसा कदम उठाया। और अब उसने काला धन के खिलाफ ऑपरेशन क्लीन मनी लॉन्च किया है। आयकर विभाग अब छापेमारी की खबरों को वेबसाइट पर सार्वजनिक करेगा। सरकारी एजेंसियां भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से घिरे तमाम नेताओं के खिलाफ अभियान चलाएं, चाहे वे किसी भी दल के हों।

बदहाली का ठीकरा किसके सिर?

हमारे देश में तकनीकी शिक्षा विभिन्न विसंगतियों के चलते दयनीय स्थिति में है। पिछले वर्ष से अब तक 122 निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों ने स्वैच्छिक बंदी के विकल्प को चुना है। इनमें से ज्यादातर कॉलेज महाराष्ट्र, गुजरात और हरियाणा के हैं। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) के आंकड़ों के अनुसार 2016-17 में पुणे, नागपुर, औरंगाबाद, जलगांव और कोल्हापुर के 23 इंजीनियरिंग कॉलेज बन्द हो चुके हैं। इसी अवधि में गुजरात के 15, तेलंगाना के 7, कर्नाटक के 11, उत्तर प्रदेश के 12, पंजाब के 6, राजस्थान के 11 और हरियाणा के 13 इंजीनियरिंग कॉलेज बन्द हो चुके हैं। ऐसा नहीं है कि केवल इसी साल इंजीनियरिंग कॉलेजों को छात्र नहीं मिल रहे हैं। पिछले साल भी यही हाल था। ऐसे में यह विचार करना जरूरी है कि इंजीनियरिंग तथा मैनेजमेन्ट की डिग्रियों से छात्रों का मोह भंग क्यों हुआ है? अगर कम्पीटीशन के माध्यम से इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने की बात छोड़ दें तो सन् 2000 तक छात्र दक्षिण के निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों में इंजीनियरिंग पढ़ने जाते थे। उस समय इंजीनियरिंग में प्रवेश कराने वाले दलालों ने भारी मुनाफा कमाया। 1997 में दक्षिण की तर्ज पर ही देश के विभिन्न राज्यों में निजी इंजीनियरिंग कॉलेज खुलने शुरू हुए। सन् 2006 से 2010 तक देश में कुकुरमुत्तों की तरह निजी इंजीनियरिंग तथा मैनेजमेन्ट कॉलेज खुले। पहले से ही यह आशंका व्यक्त की जा रही थी कि अगर इन निजी कॉलेजों का पनपना इसी तरह जारी रहा तो भविष्य में इन कालेजों को छात्र मिलने मुश्किल हो जाएंगे। यह आशंका सही साबित हुई। आज इन कॉलेजों को अपनी सीटें भरने के लिए ऐड़ी चोटी के जोर लगाने पड़ रहे हैं। छात्र न मिलने के कारण अनेक कॉलेज बन्द होने के कगार पर हैं। इन कॉलेजों को छात्र न मिलने का एक बड़ा कारण जरूरत से ज्यादा कॉलेजों का पनपना तो है ही। साथ ही कुछ अन्य कारण भी हैं। अच्छी जगह से डिग्री लेने की चाहत और कुछ अपवादों को छोड़ दें तो आज अभिभावक और छात्रों को इंजीनियरिंग और मैनेजमेन्ट की डिग्री एक मजाक लगने लगी है। अधिकतर निजी कॉलेजों से ये डिग्रियां लेने के बाद छात्रों को नौकरी प्राप्त करने के लिए पापड़ बेलने पड़ रहे हैं। नौकरी मिल भी जाती है तो वहां भी उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी जब छात्रों को डिग्री के अनुसार वेतन नहीं मिलता तो वे अपने आपको ठगा हुआ महसूस करते हैं। यही कारण है कि आज अभिभावकों और छात्रों का इन डिग्रियों से मोह भंग हुआ है और वे दूसरी डिग्रियों की तरफ रुख करने लगे हैं। दरअसल निजी कॉलेजों के मालिकों को अपने संसाधनों के माध्यम से कॉलेजों का खर्चा चलाना पड़ता है। जब वे अपना पैसा लगाकर कालेज खोलते हैं तो जाहिर है कि वे उससे मुनाफा भी कमाना चाहेंगे। ऐसे कॉलेजों को सरकार की तरफ से भी कोई अनुदान नहीं मिलता। इस मामले में सरकार सारा दोष कॉलेजों के मालिकों पर डाल देती है। क्या कारण है कि सरकार लगातार अपनी जिम्मेदारियों से बचती रहती है? अगर कॉलेजों को छात्र नहीं मिलेंगे तो वे किस प्रकार अपने संसाधन जुटा पाएंगे? सरकार अगर कॉलेजों के मालिकों को कॉलेज खोलने की अनुमति देती है तो उसे यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि कॉलेजों को छात्र भी मिलें। दरअसल इस दौर में शिक्षा प्रदान करने की यह प्रक्रिया पूरी तरह से एक व्यवसाय में तबदील हो चुकी है। इस व्यवसाय में सरकार, सम्बन्धित विश्वविद्यालय और एआईसीटीई सभी शामिल हैं। इन कॉलेजों को आल इंडिया कौंसिल फार टेक्नीकल एजुकेशन यानी एआईसीटीई नामक संस्था मान्यता देती है। पिछले दिनों एआईसीटीई के अन्दर भ्रष्टाचार की खबरें प्रकाश में आई थीं। विडम्बना यह है कि कई बार एआईसीटीई से जुड़े कुछ लोग निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों के हितों के अनुरूप कार्य करते हैं तो कई बार इन कॉलेजों से पैसे उगाहने के लिए जानबूझ कर कॉलेजों में कमियां निकाल दी जाती हैं। विडम्बना यह है कि कॉलेजों के मालिकों को तो सभी दोष दे देते हैं लेकिन सरकारी मशीनरी को कोई दोष नहीं देता। इस दौर में सबसे बड़ा सवाल यह है कि सरकार, प्राविधिक विश्वविद्यालय और एआईसीटीई छात्रों को केवल डिग्रियां बांटना चाहती हैं या फिर उन्हें एक सफल इंजीनियर एवं प्रबन्धक बनाना चाहती हैं? इन तीनों संस्थाओं के मौजूदा रवैये से तो यही लगता है कि हम डिग्रीधारी युवकों की एक फौज खड़ी करना चाहते हैं। शिक्षा के मन्दिरों का बन्द होना न तो शुभ होता है और न ही समाज में सकारात्मक सन्देश देता है। इसलिए हमें पहले ही ऐसी कोशिश करनी होगी, जिससे कि ये कॉलेज बन्द होने की स्थिति में न आएं। साथ ही ये कॉलेज शिक्षा की दुकान न बनने पाएं।

बुढ़ापे की पढ़ाई, सीखने की कोई उम्र नहीं

सही मायनो में पढ़ाई-लिखाई का उम्र से कोई ताल्लुक नहीं होता। मन मजबूत करने की बात है। जीवन में कभी हालात ऐसे हो जाते हैं कि चाहते हुए भी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती। मन के कोने में दबी यह अभिलाषा मौका पाते ही फिर हरी हो जाती है। ऐसे तमाम वाकये सामने आते हैं कि नाती-पोतों की उम्र के विद्यार्थियों के साथ कई उम्रदराज पढ़ाई करते नजर आते हैं? इसी साल पटना के राम कुमार वैश्य ने पिछले दिनों लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में एक ऐसे शख्स के रूप में नाम दर्ज कराया, जिसने 97 साल की उम्र में अर्थशास्त्र में एमए की पढ़ाई पूरी की। ऐसा ही वाकया एक बार फिर चर्चा में आया जब हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और शिक्षक भर्ती घोटाले में सजा काट रहे ओम प्रकाश चौटाला ने बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर बीए की तैयारी शुरू कर दी। बारहवीं के बाद उन्हें लगा कि आगे की पढ़ाई पूरी की जाये। प्रदेश की राजनीति में बड़ी भूमिका निभाने के चलते उन्हें पढ़ने-लिखने का वक्त नहीं मिला। फिर किग या किंगमेकर को इसकी जरूरत भी नहीं। दरअसल, पिछले दशकों में लोगों की सोच और मिजाज में खासा बदलाव आया है। ज्ञान अर्जन की कोई उम्र नहीं होती। उनके पास समय भी होता है और जज्बा भी। पिछले दिनों खबर आई थी कि ताइवान में एक 105 साल के शख्स ने पीएचडी की पढ़ाई शुरू की। घर की जिम्मेदारियों के चलते पहले उन्हें पढ़ने का मौका नहीं मिल पाया था। मगर अब वे अपने सपने पूरे कर रहे हैं। ऐसी उम्र में जब लोग घर से बाहर निकलने में कतराते हैं, वे विश्वविद्यालय पढ़ने जाते हैं। ऐसे ही एक शख्स राजस्थान के पूर्व डीआईजी पुलिस सी.पी.शर्मा हैं, जिन्होंने वर्ष 2010 में सेवानिवृत्ति के बाद पढ़ाई शुरू की। वे दर्शन शास्त्र में एमए की पढ़ाई कर रहे थे। उनका मकसद सिर्फ ज्ञान हासिल करना है और उन्होंने ताउम्र पढ़ाई करने का संकल्प लिया है। सही मायनो में ऐसे लोग समाज के लिये प्रेरणास्रोत हैं। जो संदेश देते हैं कि राह की मुश्किलों के चलते जो सपने अधूरे रह गये थे, उन्हें अब वक्त मिलने पर पूरा किया जाये। समय के साथ सपने भी सच होने लगे हैं। वैसे भी इनसान कभी इतना बूढ़ा भी नहीं होता कि नये लक्ष्य निर्धारित न कर सके और नया सपना न देख सके।

स्वच्छता अभियान के अर्धसत्य

स्वच्छ भारत अभियान ने 30 माह का सफर पूरा कर लिया। इस अवसर पर एक देशव्यापी सर्वेक्षण में बताया गया कि उत्तर प्रदेश के गोंडा नगर ने सबसे गंदे, जबकि मध्य प्रदेश के इंदौर ने सबसे स्वच्छ शहर का सम्मान हासिल किया है। इस सर्वेक्षण ने पिछले 30 महीने के अभियान की उपलब्धियों और प्रगति के रास्ते में आ रही समस्याओं का जायजा लेने का मौका भी दिया है। स्वच्छता की इस महत्वपूर्ण मुहिम में देश के 434 शहर शामिल हैं। सर्वेक्षण के नतीजों ने मध्य प्रदेश के भोपाल और आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम को अच्छी साफ-सफाई वाले शहरों में रखा है। अध्ययनकर्ताओं ने अभियान की एक बड़ी उपलब्धि 300 शहरों में घर-घर से कचरा इकट्ठा करने की व्यवस्था को बताया। यह खास इंतजाम गुजरात, आंध्र और म.प्र. में मुख्यतः देखने को मिला। इस सर्वेक्षण में कई बड़ी खामियां भी रहीं। कचरे के निपटान की सही जानकारी और उसके विश्लेषण को पड़ताल का विषय नहीं बनाया गया। कचरे के निपटान से पहले जरूरी है कि उसके ठोस तथा जैविक हिस्से को अलग-अलग किया जाए। इसमें जैविक कचरे को पुनः उपयोग लायक बनाने की जरूरी कवायद को भी नहीं जांचा-परखा गया। नतीजा बताता है कि 118 शहरों में खुले में शौच की समस्या बदस्तूर बनी हुई है। सर्वेक्षण के दौरान यह देखा जाना बेहद जरूरी था कि जो कचरा शहरों से पहुंचाया जाता है, उसका निस्तारण कैसे किया जाता है या किया ही नहीं जाता। इंदौर में आवासीय कल्याण समितियां हर घर से कचरे को जमा करने के काम में सहयोग करती हैं, लेकिन उस कचरे को भी ठोस और जैविक कूड़े में छांटकर अलग नहीं किया जाता। इसी तरह क्या उन नालों को भी सर्वे में शामिल किया गया, जो बरसों से केवल कागजों पर ही साफ किए जाते रहे हैं। इस सर्वेक्षण में जिन जरूरी बिन्दुओं की अनदेखी की गई है, उसका खुलासा सरकार की अपनी ही रिपोर्ट कर देती है। इसके अनुसार स्वच्छता अभियान के अंतर्गत बनाए गए शौचालयों में से 60 प्रतिशत का उपयोग नहीं हो पा रहा है क्योंकि उनके लिए पानी की कोई भी व्यवस्था नहीं की गई है। प्रधानमंत्री की पहल के बाद बड़े पैमाने पर शौचालयों का निर्माण हुआ है, लेकिन राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय ने एक लाख घरों की जांच के बाद पाया कि आज भी गांवों में 55.4 फीसदी लोग खुले में ही शौच के लिए जाते हैं। शहरों में भी 7.5 प्रतिशत आबादी शौचालय का उपयोग नहीं कर रही है या दूसरे शब्दों में अब भी खुले में ही मलत्याग के लिए जाती है। नतीजे बताते हैं कि गांवों में 40 फीसदी से ज्यादा शौचालयों में पानी की निकासी और नालियों की व्यवस्था नहीं है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में जो शौचालय बनाए गए, उनका उपयोग पानी के अभाव के कारण स्टोर रूम और रसोई के रूप में किया जा रहा है। मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त बिजवेडा विल्सन कहते हैं कि स्वच्छता अभियान में मल के निस्तारण के बारे में सोचा ही नहीं गया, जिसने इस महत्वाकांक्षी योजना को असफल बनाकर रख दिया है। हमें यह समझना होगा कि स्वच्छता के लिए जनता को जागरूक करने का काम पूरे समाज के स्वास्थ्य और प्रगति से जुड़ा हुआ है। इसीलिए ध्यान रखना आवश्यक है कि यह लक्ष्य केवल तस्वीरों और कैमरों का विषय बनकर न रह जाए। पहली बार गांधीजी ने न केवल स्वयं साफ-सफाई से रहने वरन दूसरों को नसीहत के लिए खुद अपने हाथों से गंदगी को हटाने की पहल की। इसके विपरीत वर्तमान स्वच्छता अभियान की शुरुआत को ही हमने एक बड़ी उपलब्धि मान लिया और उत्सव मनाने लगे। आज हमारा समय गांधी का नहीं है। हमने अंग्रेजी पहनावा, रहन-सहन तो अपना लिया, लेकिन सफाई की आदत नहीं अपनाई। नहीं सीखा कि विकसित देश अपने जैविक और ठोस कचरे से किस प्रकार निजात पाते हैं।

सबक का एहसास

एक नगर में एक सेठ ने एक धर्मार्थ अन्न भंडार खोल रखा था। हकीकत यह थी कि सेठ साल के अंत में उसके गोदामों में बचे सड़े-गले अन्न को ही दान में देता था। प्रायः भूखों को सड़ी ज्वार की रोटियां प्राप्त होती थीं। सेठ के बेटे के विवाह के बाद घर में एक धर्मज्ञ पुत्रवधू आई। उसे गरीबों के प्रति अपने ससुर का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। एक दिन उसने अन्न भंडार से ज्वार का आटा मंगाकर उसकी रोटियां बना सेठ को परोस दीं। काली, मोटी रोटी देख सेठ ने जिज्ञासावश कौर मुंह में डाल लिया। पर वह इतना कड़वा था कि उसने तुरंत थू-थू करते हुए उसे उगल दिया। वह गुस्से में अपनी पुत्रवधू से बोला- बेटी, घर में आटे की कमी नहीं, फिर तुमने इस सड़े ज्वार के आटे की रोटियां क्यों बनाई? पुत्रवधू बोली- पिताजी, आपके अन्न भंडार से रोज ही ऐसा आटा गरीबों को बांटा जाता है। आप जो यहां दान करते हैं, परलोक में वही आपको प्राप्त होता है। आपको अभी से ऐसी रोटी खाने की आदत हो जाए, यही सोच मैंने आपको सड़े ज्वार की रोटी खिलाई। सेठ अपनी पुत्रवधू के संदेश को समझ गया। अगले दिन से ही अन्न भंडार से गरीबों को अच्छा अन्न मिलने लगा।

प्रेरक प्रसंग

नज़रों के आर-पार

किसी अन्धे आदमी ने एक बार भगवान से पूछा कि आंखें खोने से भी ज्यादा नुकसानदायक क्या हो सकता है? ईश्वर का जवाब था कि आंखों के नुकसान से भी बड़ा नुकसान है विज़न यानी दृष्टिकोण का खो जाना। कुदरत ने सबको दो आंखें दी हैं पर फिर भी सबको एक समान दिखाई नहीं देता। दरअसल देखने में सिर्फ आंखों की ही भूमिका नहीं है बल्कि बुद्धि की भी है। और बुद्धि वही देखती है जो देखना चाहती है या जितना देखना चाहती है। कई बार तो लगता है कि हमने अपनी-अपनी आंखों पर अपनी पसन्द-नापसन्द के चश्मे चढ़ा रखे हैं। इन चश्मों के अपने-अपने रंग हैं क्योंकि ये चश्मे जाति और धर्म के हिसाब से बने हैं। और बात नताआ का कर ता उनका आंखों पर चश्मे नहीं, पट्टियां हैं जो दूसरों के दुख-दर्द उन्हें देखने ही नहीं देतीं। उन्हें तो बस वही दिखाई देता है जो उनकी पार्टी चाहती है। जिस तरह जेबकतरे की नज़र सिर्फ आदमी की जेब पर टिकी रहती है वैसे नेताओं की नज़र आदमी के वोट पर टिकी रहती है। बाकी बातें सब फालतू हैं। निगाहें कितनी भी दूर तक चली जायें पर अपने साथ वही लाती हैं जो मन चाहता है। निगाहें भी कमाल हैं। कभी-कभी तो किसी चेहरे पर ऐसे जा चिपकती हैं जैसे आजकल के मनचलों के कानों पर मोबाइल चिपका हुआ है। कुछ आंखें तो जादू कर देती हैं। आंखों को शराबी और शरबती भी कहा गया है। आंखें सागर हैं, झील हैं, मयखाना हैं। आखा का आसुआ आर ख्वाबों से भी गहरा नाता है। पर आंखों की सबसे गज़ब चीज़ यह है कि लोग नज़रों को पढ़ लेते हैं। इसीलिये बड़े-बूढ़ों ने आंखें झुकाये रखने की नसीहत दी है। कभी-कभी आंख दिखाने का काम भी आंखें करती हैं। जो आंख के इशारों को नहीं समझते वे या तो ढीठ होते हैं या दिलदार। दरअसल आंखें डाकू भी होती हैं। जैसे सरेआम एटीएम लूट लिये जाते हैं, वैसे ही आंखें दिल की दौलत एक पल में लूट सकती हैं। ऐसा नहीं है कि बन्द आंखें देख नहीं सकतीं। बन्द आंखों में भी देखने की कमाल की क्षमता होती है। सच बात तो यह है कि बन्द आंखें भीतर की सच्चाई को देख सकती हैं जो हम देखना नहीं चाहते।

राशिफल

मेष- आपका दिन मित्रों और सामाजिक कार्यों के पीछे भा÷दौड़ में बीतेगा। धन भी खर्च करना पड़ेगा। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। प्रवास और पर्यटन होगा।

वृषभ- आज का दिन शुभ फलदायी है ऐसा गणेशजी कहते हैं। विशेषकर व्यवसाय करने वालों के लिए आज का दिन बहुत लाभदायी रहेगा। व्यवसाय में पदोन्नती का भी योग है।

मिथुन- आपका दिन प्रतिकूलता लेकर आएगा, ऐसा गणेशजी कहते हैं। मानसिकरूप से व्यग्रता और शारीरिक रूप से शिथिलता का अनुभव करेंगे। कार्य करने का उत्साह नहीं रहेगा।

कर्क- वैचारिक रूप से नकारात्मकता छाई रहने से आज दिनभर शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थता बनी रहेगी। इसलिए नकारात्मकता से दूर रहने की चेतावनी गणेशजी देते हैं।

सिंह- आज पति-पत्नी के बीच में अनबन हो जाने से दांपत्यजीवन में कलेश हो सकता है ऐसा गणेशजी कहते हैं। आप दोनों में से किसी का स्वास्थ्य न बिगड़े इसका भी ध्यान रखें।

कन्या- व्यवसायिक क्षेत्र में आज यश प्राप्त होने की संभावनाएं अधिक हैं। सहकर्मचारियों का सहकार प्राप्त होगा। पारिवारिक वातावरण में सुख का अनुभव हो÷ा।

तुला- वैचारिक रूप से विशालता और वाणी की मधुरता अन्य लोगों को प्रभावित करेगी और इससे अन्य व्यक्तियों के साथ संबंधों में मेल बना रहेगा। चर्चा-विचार में भी आप प्रभाव जमा सकेंगे।

वृश्चिक- स्नेहीजनों के साथ संबंधों में सावधानी बरतनी होगी ऐसा गणेशजी कहते हैं। शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थता के कारण व्यग्रता बनी रहेगी। माता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

धनु- प्रतिस्पर्धी आज परास्त होंगे, ऐसा गणेशजी कहते हैं। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। नए कार्य का शुभारंभ करने के लिए समय अनुकूल है।

मकर- आज का दिन मिश्र फलदायी है ऐसा गणेशजी कहते हैं। परिवारजनों के साथ गलतफहमी या मनमुटाव के प्रसंग बनने से मन में ग्लानि छाई रहेगी। निरर्थक खर्च होगा।

कुंभ- आर्थिक दृष्टिकोण से आज का दिन लाभदायी है ऐसा गणेशजी कहते हैं। परिवार का वातावरण आनंद से भरा रहेगा। मित्रों और परिवारजनों के साथ आनंदपूर्वक समय बीतेगा।

मीन- कोर्ट-कचहरी अथवा संपत्ति की झंझट में आज न पड़ने की गणेशजी की सलाह हैं। आज सभी कार्यों में मन की एकाग्रता से फायदा होगा। स्वास्थ्य संभालिएगा।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य -056(Rns)

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. खूब कसा हुआ, फूर्तिला, जो शिथिल व आलसी न हो 3. सार्वजनिक स्थान, संस्था, अस्तित्व, समिति 4. पौरुष, पुरुषत्व, मर्द होने का भाव 6. अंधेरा, अंधकार 7. लिपाई करना 9. शरीर, काया, जिस्म 10. मां के पिता, विभिन्न 12. महीना, मास 14. प्रियतम, बलमा, सजना 15. पांडवों का सबसे छोटा भाई 17. नशा, घमंड, खाता 19. वनोपज, वन से प्राप्त सामाग्री 21. शक्तिशाली, बलवान 24. तीव्र इच्छा 25. हथेली।

ऊपर से नीचे

1. निंदा, बुराई 2. निर्जीव, निष्प्राण 3. ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट लय में प्रस्फुटन, धुन, म्युजिक 4. झुका हुआ, विनीत 5. रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना 8. आश्रय, शरण 11. जन्म, जिंदगी 12. इंसानियत, मनुष्यता 13. रास्ता, मार्ग 14. एक हिंदी महीना, श्रावण 15. सपाट, जो उबड़-खाबड़ न हो 16. पति का छोटा भाई 18. गहरा कीचड़, पंक 20. आत्मा, अंत:करण (उ.) 22. बीता हुआ या आने वाला दिन 23. बगुला।

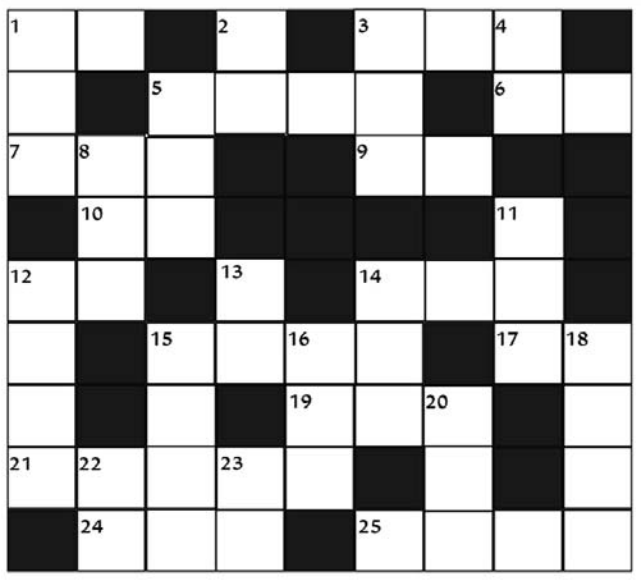

पिछले अंक का हल

गु	मा	न			प	यो	द	
न		ह	क	दा	र		ल	य
ह	वा	ला	त		च		द	म
गा			रा	ज	म	ह	ल	
र	ई	स		ग		स		अ
	मा		प	त	वा	र		ल
ख	न	क	ना		ह	त		बे
स	दा		ह		वा		शो	ला
रा	र				ही	र	क	

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3		2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7